प्रारंभिक स्तन कैन्सर

महिलाओं में स्तन कैन्सर

प्रस्तावना

यह पुस्तिका महिलाओं में स्तन कैन्सर के विषय में है। इसे न केवल उन महिलाओं के लिये लिखा गया है जिनमें प्रारंभिक स्तन कैन्सर का निदान हो चुका है बल्कि यह उन महिलाओं के लिये भी है जो निदान हेतु परीक्षणों से गुजर रही हैं।

हमें आशा है कि यह पुस्तिका आपके मन में उठ रहे सवालों और चिंताओं का निराकरण करेगी। हम आपको आपके लिये सर्वोत्तम इलाज के विषय में सलाह नहीं दे सकते क्योंकि यह निर्णय केवल आपका इलाज करने वाले चिकित्सक ही ले सकते हैं, जो आपके चिकित्सकीय इतिहास की जानकारी रखते हों।

इस पुस्तक में ऐसे स्तन कैन्सर के विषय में जानकारी दी गई है जो शरीर के अन्य भागों में फैला न हो। ऐसा स्तन कैन्सर जो शरीर के अन्य भागों में फैल गया हो उसे मेटास्टाटिक (फैला हुआ) स्तन कैन्सर कहते हैं। मेटास्टाटिक स्तन कैन्सर के विषय में हमारे पास एक अलग पुस्तिका उपलब्ध है।

पुरुषों में स्तन कैन्सर बहुत कम ही देखने को मिलता है। इस विषय पर भी अलग पुस्तिका उपलब्ध है– पुरुषों में स्तन कैन्सर को समझना' – जिसमें पुरुषों में प्राथमिक और विकसित स्तन कैन्सर के बारे में जानकारी दी गई है।

भारत में स्तन कैन्सर का प्रसार

भारत में शहरी महिलाओं में स्तन कैन्सर सबसे ज्यादा प्रमाण में देखा जाता है, जबकि ग्रामीण महिलाओं में गर्भाशय–ग्रीवा के कैन्सर का प्रमाण अधिक है। यद्यपि स्तन कैन्सर महिलाओं में ही अधिकतर पाया जाता है, किन्तु पुरुषों में भी बहुत कम प्रमाण में देखा जाता है। भारत में प्रतिवर्ष नए निदानित स्तन कैन्सर के केसों का प्रमाण – प्रत्येक 1,00,000 स्वस्थ महिलाओं में 8–9 है और यूएसए में इसका प्रमाण 1,00,000 स्वस्थ महिलाओं में 100 है।

भारत में, वर्ष 2001 से 2003 के दौरान पाँच शहरी केन्द्रों – मुम्बई, दिल्ली, चेन्नाई, भोपाल और बंगलुरु, और एक ग्रामीण केन्द्र बारशी – में सभी आयुवर्गों में कुल 202 पुरुषों में स्तन कैन्सर के केस पंजीकृत हुए (सभी प्रकार के कैन्सर के केसों का 0.46%), जबकि सभी आयुवर्ग की महिलाओं में यह संख्या 11,502 है (सभी प्रकार के कैन्सर के केसों का 25.9%)।

वर्ष 2016 में मुम्बई के टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल में स्तन कैन्सर के 4,410 मामले दर्ज हुए, जिनके लिये 2,203 शल्यक्रियाएँ की गईं (जिनमें सभी प्रक्रियाएँ शामिल थीं)। 1931 रोगीयों को सहायक रसायन चिकित्सा दी गई, जबकि 1,344 रोगीयों को शामक रसायन चिकित्सा दी गई। 1,412 रोगीयों को विकिरण चिकित्सा दी गई।

स्तन और स्तन कैन्सर

कैन्सर क्या है?

कैन्सर हमारे शरीर की कोशिकाओं में शुरु होता है। हमारे अंगों और ऊतकों का निर्माण करने वाले रचना–घटक कोशिकाएँ कहलाते हैं। ये कोशिकाएँ नियंत्रित रूप से विभाजित होकर नई कोशिकाओं का निर्माण करती हैं। हमारा शरीर इसी प्रकार से विकसित होता है, बीमारी या चोट से ठीक होता है।

कोशिकाओं को हमारे शरीर से सूचना मिलती है कि कब विभाजित होना है, कब विकसित होना है और कब विकास को रोकना है। जब कोई कोशिका जरूरी नहीं रहती या ठीक होने लायक नहीं रहती तब उसे काम करना बंद करने की सूचना मिलती है और वह विकास करना बंद करके नष्ट हो जाती है।

जब कोशिकाओं की सामान्य कार्यप्रणाली में विघ्न आता है और वे असामान्य रूप से काम करने लगती हैं तब कैन्सर का विकास होता है। असामान्य कोशिकाएँ विभाजित होती रहती हैं और नई कोशिकाएँ बनती रहती हैं। ये असामान्य कोशिकाएँ मिलकर एक गाँठ/ट्यूमर बनाती हैं।

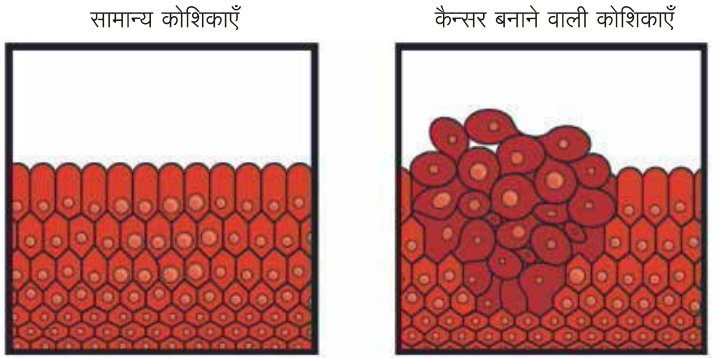

सभी गाँठें कैन्सर की हों यह जरूरी नहीं है। गाँठ में से ऊतकों या कोशिकाओं का एक छोटा–सा नमूना लेकर परीक्षण करके डॉक्टर बता सकते हैं कि गाँठ कैन्सर–युक्त है या कैन्सर–मुक्त है। इसे बायोप्सी कहते हैं। बायोप्सी से निकाले गए कोशिकाओं या ऊतकों के नमूने को सूक्ष्मदर्शक के नीचे परखा जाता है।

जो गाँठ कैन्सर–मुक्त **(बिनाइन)** होती है वह विकसित तो होती है किंतु शरीर के अन्य भागों में नहीं फैलती। कैन्सर–मुक्त गाँठ बढ़ती है तो आसपास के अंगों पर दबाव डालती है और परिणामस्वरूप तकलीफदेह हो सकती है।

कैन्सर–युक्त गाँठ आसपास के ऊतकों में भी फैल जाती है। कभी–कभी कैन्सर की गाँठ जहाँ से शुरु हुई हो वहाँ से दूसरे अंग में भी फैल जाती है। ये रक्तवाहिनीयों अथवा लसिका–तंत्र के माध्यम से शरीर के अन्य भागों में भी पहुँच जाती हैं। जब ये कोशिकाएँ शरीर के अन्य भाग में पहुँच कर वहाँ विकसित होती है और वहाँ भी एक गाँठ बना देती है तो उसे **सेकण्डरी कैन्सर** या **मेटास्टासिस** कहते हैं।

स्तन

स्तन, चरबी सहायक ऊतकों (टिशू), ग्रंथिमय ऊतकों के पिंड़ों से बने होते हैं। इन्हीं पिंड़ों में (दुग्ध ग्रंथियों) में दूध बनता है। ये ग्रंथियाँ स्तनाग्र से बहुत ही महीन दुग्ध वाहिकाओं के जाल से जुड़ी होती हैं।

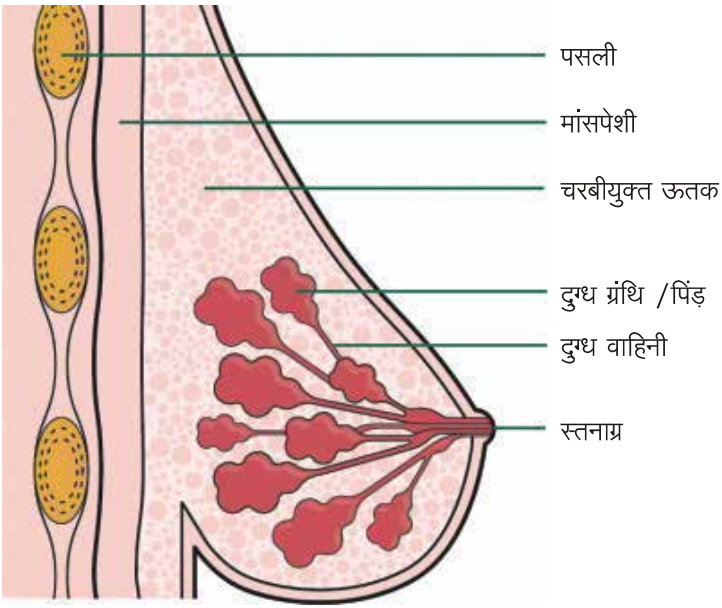

स्तन का एक तरफ से चित्र

महिलाओं में स्तनों के आकार और माप में विभिन्नता होना सामान्य है। महीने के दौरान अलग–अलग समय पर अंतःस्त्रावों के प्रभाव के कारण स्तनों में परिवर्तन आना भी

सामान्य बात है। उदाहरणार्थ, मासिक धर्म के दौरान स्तनों में गाँठों का अनुभव होना। इसीलिये स्तनों का मासिक परीक्षण महीने के एक ही समान समय पर किया जाना चाहिये अन्यथा, सामान्य परिवर्तन भी असामान्य माने जाने की संभावना होती है। आयु में वृद्धि के साथ स्तन छोटे और शिथिल हो जाते हैं।

लसिका तंत्र

लसिका–तंत्र हमें संक्रमण और बीमारी से सुरक्षा प्रदान करता है। यह लसिका–द्रव को ऊतकों से खाली करके रक्त में पुनः प्रवाहित करता है।

लसिका–तंत्र बहुत पतली नलियों से बनता है, जिन्हें लसिका–वाहिनी कहा जाता है और जो पूरे शरीर में लसिका ग्रंथियों को जोड़ने का काम करती हैं।

लसिका–ग्रंथियाँ बहुत छोटी और सेम या फली के आकार की होती हैं। ये लसिका द्रव से कीटाणुओं और जीवाणुओं को छानकर अलग करती हैं।

जब आपको कोई संक्रमण होता है तो लसिका–ग्रंथियों में सूजन आ जाती है क्यों कि ये ग्रंथियाँ संक्रमण का मुकाबला करती हैं।

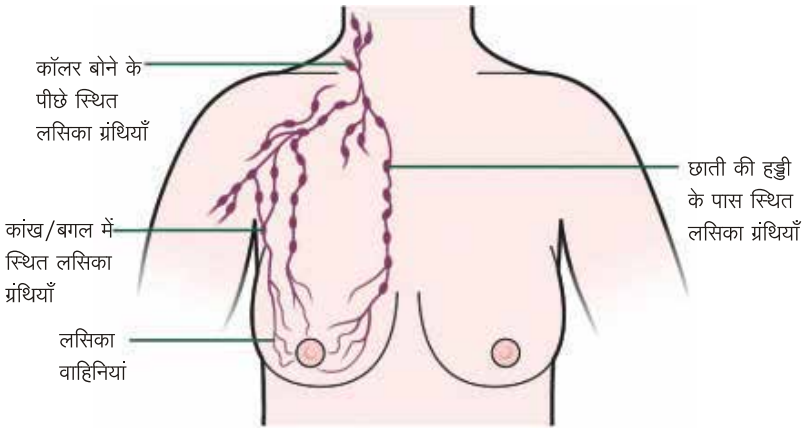

स्तनों के पास स्थित लसिका ग्रंथियाँ

कभी कभी कैन्सर लसिका तंत्र के माध्यम से फैल जाता है। अगर कैन्सर की कोशिकाएँ स्तनों के बाहर फैल जाती हैं तो उनके कांख/बगल में स्थित लसिका ग्रंथियों तक पहुँचने की पूरी संभावना रहती है। कैन्सर की उपस्थिति के लिये किये जानेवाले परीक्षणों में प्रायः लसिका ग्रंथियों का परीक्षण किया जाता है। छाती की हड्डी, गरदन और कॉलर बोन के पीछे भी लसिका ग्रंथियाँ होती हैं।